ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

व्यक्तित्व विकास में पारिवारिक वातावरण का प्रभाव

अनामिका, शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
डॉ. उषा शर्मा, सहायक आचार्य (गृहविज्ञान विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावित शोध का परिचयात्मक विश्लेषण

व्यक्तित्व के विकास में प्रारम्भिक सामाजिक अनुभवों का विशेष महत्व है। प्रारम्भिक अनुभवों को जीवन की आधारशीला के रूप में स्वीकार किया जाता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षो में बालकों को जैसा अनुभव होता है और वे जिन परिस्थितियों में रहते हैं। प्रारम्भिक वर्षो में बालकों को जैसा अनुभव होता है और वे जिन परिस्थितियों में रहते है, उनका उन बालकों पर विशेष प्रभाव पड़ता है –उदाहरण के लिए परिवार में कोई छोटी लड़की है और उसे बड़ा भाई प्रायः तंग करता हो। ऐसा प्रायः होता भी है। इसके कारण वह लड़की अपने भाई के प्रति अक्रामक व्यवहार कर सकती है और उससे घृणा भी कर सकती है। इस अनुभव का उपयोग वह उन लोगों पर भी कर सकती है जो उसके भाई जैसा व्यवहार करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रारम्भिक अनुभवों का जीवन में अन्तरण होता रहता है। इसके विपरीत यदि प्रारम्भिक अनुभव सुखद रहे है तो उसका बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। बालकों का सामाजिक क्षेत्र बढ़ने से उनको यह ज्ञान होता रहता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है।

व्यक्ति के विकास में सामाजिक अंतक्रिया का विशेष महत्व है। जिस प्रकार की परिस्थितियों के साथ अन्तक्रिया होगी, उसी प्रकार का व्यक्तित्व भी विकसित होगा। यदि बालक को सामाजिक अन्तक्रिया या सामाजिक अधिगम से वंचित कर दिया जाय तो उसमें किसी भी शील–गुण का विकास नहीं हो पायेगा। क्यूशेन 1929 ने भी यही विचार व्यक्त किया है कि सामाजिक वचन का व्यक्तित्व के विकास पर बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ता है। भौगोलिक एकाकीपन एवं पारिवारिक निमंत्रणों के भी कारण बालकों को कभी–कभी सामाजिक अनुभवों का लाभ न हीं मिल पाता है। बच्चों को इन घातक परिस्थितियों से बचना चाहिए। क्योंकि ऐसा न करने से बालकों को अन्तवैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित करने में अधिक कठिनाई होती है।

बालकों में व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक स्वीकृति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपने से बड़ों तथा साथियों की स्वीकृति एवं अनुमोदन प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते है। उनकी यह इच्छा उन्हें अच्छे गुणों का विकास करने के लिए प्रेरित करती है। विद्यालय में प्रवेश लेने के उपरान्त वे अपने साथियों की भावनाआं को अधिक महत्व देने लगते है और उन्हें अच्छे लगने वाले व्यवहारों को अर्जित करने लगते है। कभी–कभी इस मुद्दे पर माता–पिता की असहमति हो सकती है फिर भी वे अपने साथियों की इच्छाओं को अधिक महत्व देना चाहते है। वे सुखद गुणों का विकास करके लोकप्रिय बनना चाहते है। इससे स्पष्ट है कि सामाजिक स्वीकृति से बालकों में अच्छे गुणों का विकास होता है। परन्तु ऐसे बालक जिन्हें सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पाती है या तिरस्कृत होते है, उनमें हीनता घर कर जाती है। ऐसे बालक जिन्हें नाममात्र की सामाजिक स्वीकृति मिल पाती है उनमें तनाव देखा जाता है वे अन्य बालकों पर अपना प्रभाव जमाने का पूरा प्रयास करते है।

बालक के स्व तथा उसके व्यक्तित्व पर प्रस्थिति से सम्बन्धित प्रतीकों का भी प्रभाव पड़ता है। समाज में मान्यता प्राप्त या महत्व दर्शाने वाले प्रतीकों से बालकों को अवगत होना चाहिए। ऐसा देखा जाता है कि अपने समूह में जो बच्चे अच्छे वस्त्र धारण किये रहते है उनके प्रति अनुकूल या धनात्मक धारणा शीघ्रता से बन जाती है। इस प्रतीक से बालक के परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अनुमान लगता है। बिकमैन के अनुसार परिस्थिति के विभिन्न प्रतीकों में वस्त्र का स्तर बच्चों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इससे समूह में बालकों को स्वयं की भी स्थिति की झलक मिलती है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

जीवन के प्रारम्भिक काल में उस व्यक्ति के माँ से सम्बन्धों का प्रभाव उसके जीवन पर पर्यावरण सम्बन्धी कारकों के देखते हुए सर्वाधिक पर पड़ता है। Harlow 1966 के अनुसार जब बन्दर के नवजात शिशु को बारह महीने तक पूर्ण एकान्त में रखा जाता है तो वह बन्दर का बच्चा असामान्य सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करता है। एकान्त में रहने के बाद बन्दर का बच्चा दूसरे बन्दरों के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित नहीं करता है। वह अधिक उत्सुक दिखाई देता है, परन्तु इसमें भय भी अधिक होता है। Yarro 1963 के अनुसार बच्चों का संवेगात्मक और बौद्धिक विकास का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बालक के माँ के साथ अन्तः क्रियाओं की मात्रा और गुण से सम्बन्धित है।

माँ की भांति पिता की भी उपस्थिति, अनुपस्थिति और व्यवहार आदि का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर पिता की अनुपस्थिति का पड़ता है। एक अध्ययन में डपेबीमसए 1958 के अनुसार यह देखा गया कि पिता की अनुपस्थिति का प्रभाव बच्चों के समाजीकरण और उनके विश्वास पर पड़ता है। ग्रीन स्टीन 1966 ने अपने अध्ययन में यह पाया कि पिता–पुत्र के सम्बन्धो का प्रभाव बालक के होम्योसेक्सुअल विकास पर भी पड़ता है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

बालक के व्यक्तित्व पर माता–पिता के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार के अन्य सदस्य बालक के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते है, उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करते है उससे अच्छी–अच्छी बात सिखाते है तो निश्चय ही ऐसा वातावरण बालक के व्यक्तित्व में धनात्मक क्षणों को उत्पन्न करता है। परिवार के अनेक सदस्यों माता–पिता के बाद भाई–बहन, दादा, दादी, चाचा, चाची ताऊ ताई आदि किसी का भी प्रभाव अधिक हो सकता है। परिवार के अनेक सदस्यों में से बालक के व्यक्तित्व पर उस सदस्य का प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है जिस सदस्य के सम्पर्क में बालक सर्वाधिक आता है।

बालक अपने अभिभावकों की अभिवृत्तियों का प्रत्यक्षीकरण किस प्रकार करता है, इसका प्रभाव भी व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। ऐसे ही कई अध्ययनों में देखा गया है कि जो बालक यह अनुभव करते हैं कि उनके माता–पिता उनको अधिक स्वीकृत करते हैं, उनकी अहम् शक्ति अधिक होती है। उनकी आकांक्षाएँ अपेक्षाकृत अधिक वास्तविक होती है तथा उनमें स्वतन्त्रता भी अधिक होती है।

परिवार का आकार भी बालक के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। जब परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त बच्चों की संख्या अधिक होती है तब एक नवजात शिशु भाषा, ज्ञान तथा मानसिक योग्यताओं का विकास अन्य बालकों की उपस्थिति के कारण अपेक्षाकृत शीघ्र सम्पन्न होता है। परन्तु भाई–बहनों की संख्या जब अधिक होती है और परिवार में सुविधाओं का अभाव होता है। तब व्यक्तित्व पर इस प्रकार के आकार का प्रभाव ऋणात्मक पड़ता है। हरलॉक 1978 का विचार है कि ''यद्यपि मध्यम और छोटे आकार के परिवारों के बच्चे भाई–बहन की स्पर्धा, ईर्ष्या, संरक्षकों के अति संरक्षण, संरक्षकों की शंका के शिकार, संरक्षकों के
पक्षपात के शिकार या इनसे ग्रस्त होते है, यह बालक भी सामान्यत जीवन में बेहतर समायोजन करने में सफल होते है। अपेक्षाकृत उन बालकों के जो बड़े परिवारों से सम्बन्ध होते है।''

परिवार की आर्थिक स्थिति का व्यक्तित्व पर एक विशेष सीमा तक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि अत्यधिक गरीबी में पले बच्चों में हीनता और असुरक्षा की भावनायें अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलती है। बहुधा गरीब परिवारों में परिवार के बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन और विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का अभाव होता है। जिससे इन बच्चों का शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है। साथ ही साथ गरीब के तनावपूर्ण वातावरण का प्रभाव बच्चों के मानसिक विकास और व्यवहार अथवा व्यक्तित्व पर भी पड़ता है।

बालक का जन्म क्रम भी उसके व्यक्तित्व विकास से महत्वपूर्ण ढंग से सम्बन्धित है। अध्ययनों में पहले दूसरे और अन्तिम बच्चों के कुछ व्यक्तित्व लक्षण देखे गये है। उदाहरण– पहले बच्चों में अनिश्चयता, असुरक्षा, आक्षितता, उत्तरदायित्व, ईर्ष्या, रूढ़िवादिता, प्रभुत्व और आक्रामकता, सुझाव, ग्रहणशीलता, उत्तेजकता, संवेदनशीलता अन्तर्मुखी, उच्च उपलब्धि, अभिप्रेरणा, सम्बन्धन, अभिप्रेरणा आदि। इसी प्रकार के जिस बच्चे का जन्म–क्रम द्वितीय होता है, उसमें निम्न व्यक्तित्व लक्षण पाये जाते है। स्वतंत्रता, आक्रामकता अच्छा समायोजन विश्वसनीयता, साहसी, विनोदी, बहिर्मुखी। इसी प्रकार से अन्तिम जन्म–क्रम वाले बालक के व्यक्तित्व में निम्न विशेषताएँ पाई जाती है– सुरक्षा, आत्म–विश्वास, अच्छी, प्रवृत्ति, उद्धार, अपरिपक्व, बहिर्मुखी, अनुपयुक्ता की भावना, हीनता की भावना, बेचैनी, ईर्ष्या, अनुत्तरदायित्व, प्रसन्नता आदि।

परिवार के बाद बालक के व्यक्तित्व पर पड़ोस का प्रभाव पड़ता है। पड़ोस के जिन बच्चों के साथ बच्चा खेलता है अथवा जो बच्चे बालक के साथ उससे खेलने उसके घर आते है, बच्चा इन बच्चों से अनेक आदतें और तरह–तरह के कौशल ही नहीं सीखता है बल्कि बच्चे का बौद्धिक और संवेगात्मक विकास भी इन बच्चों के व्यवहार से प्रभावित होता है। जब बच्चा कुछ और बड़ा हो जाता है तब वह विद्यालय जाता है। विद्यालय में वह शैक्षिक सफलता और असफलता के अनुभव प्राप्त करता है। विद्यालय

में बच्चे के समायोजन सम्बन्धी अनुभव उसके विकसित होते व्यक्तित्व के लिए लाभदायक भी हो सकते है और हानिकारक भी हो सकते है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. बालक—बालिकों में समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
2. बालक के व्यवहार पर शारीरिक विकास का गुणात्मक व मात्रात्मक के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बालक के व्यक्तित्व विकास में परिवार के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

व्यक्तित्व विकास में समायोजन का प्रभाव पड़ता है। समायोजन के कारण हमारा विकास कैसे प्रभावी होता है इसके लिए समायोजन आविष्कारिका को किया गया है। व्यक्ति जिस प्रकार के वातावरण में रहता है, उसका प्रभाव व्यक्तित्व तथा समायोजन स्तर पर पड़ता है। प्रत्येक बालक किसी न किसी सामाजिक वातावरण में रहता है, उसी वातावरण से उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। वातावरण में विद्यमान व्यक्तियों और वस्तुओं का बालक के लिये समान महत्व नहीं होता है कुछ व्यक्ति एवं वस्तु उसके लिये अधिक महत्वपूर्ण हो सकते है तथा कुछ कम महत्वपूर्ण बालक की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाइयाँ और बाधाएँ आती है। बाधाओं के कारण उसमें तनाव उत्पन्न होता है वह दुःखी तथा निराश हो सकता है, कुछ लोंगो के साथ तथा कुछ परिस्थितियों मे बालक को प्रसन्नता और संतुष्टि का अनुभव होता है। ऐसी स्थिति में उसका समायोजन अच्छा होता है। परन्तु जिन लोगों के साथ जिन परिस्थितियों में बालक को अप्रसन्नता और असंतोष मिलता है उसमें उसका समायोजन अच्छा नही होता है। सुखी और आनन्ददायक जीवन के लिये आवश्यक है कि बालक का व्यवहार समायोजित प्रकार का हो। जीवन में बालक को अनेक प्रकार के लोगों से समायोजन करना पड़ता है सभी दशाओं मं एक जैसा समायोजन नही होता है क्योंकि समायोजन कई तत्वों द्वारा निर्धारित होता है। बालक के विकास के संदर्भ में उसके समायोजन का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **Alexzender, J.C., & Sniders, R.C. (1978).** Hereditary, environment, and personality: A study of 850 sets of twins. Austin: University of Texas Press
- **Allport, G. W. (1937).** Personality: A psychological interpretation. New York:Holt.
- **Allport, G. W. (1947).** Scientific models and human morals. PsychologicalReview, 54, 182-192.
- **Allport, G. W. (1961).** Pattern and growth in personality. New York: Holt, Rinehart and Winston.
- **Bayley, N.** (1990). An alternative "description of personality": The Big-Five factor structure. Journal of Personality and Social Psychology, 59, 1216-1229